## ॥ वैश्वदेवमन्त्राः॥

(तैत्तिरीयारण्यकम्/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – ६७)

अग्नये स्वाहाँ। विश्वेंभ्यो देवेभ्यः स्वाहाँ। ध्रुवायं भूमाय स्वाहाँ। भ्रुवक्षितंये स्वाहाँ। अच्युतक्षितंये स्वाहाँ। अग्नये स्विष्टकृते स्वाहाँ॥ धर्माय स्वाहाँ। अर्धर्माय स्वाहाँ। अद्धः स्वाहाँ। ओषधिवनस्पतिभ्यः स्वाहाँ॥१॥ रक्षोदेवजनेभ्यः स्वाहाँ। गृह्याँभ्यः स्वाहाँ। अवसानेभ्यः स्वाहाँ। अवसानंपतिभ्यः स्वाहाँ। सर्वभूतेभ्यः स्वाहाँ। कामांय स्वाहाँ। अन्तरिक्षाय स्वाहाँ। यदेजंति जगंति यच चेष्टंति नाम्नों भागोऽयं नाम्ने स्वाहाँ। पृथिब्यै स्वाहाँ। अन्तरिक्षाय स्वाहां॥२॥ दिवे स्वाहाँ। सूर्याय स्वाहाँ। चन्द्रमंसे स्वाहाँ। नक्षंत्रेभ्यः

दिवे स्वाहा। सूर्याय स्वाहा। चन्द्रमस् स्वाहा। नक्षत्रभ्यः स्वाहाँ। इन्द्रांय स्वाहाँ। बृह्स्पतंये स्वाहाँ। प्रजापंतये स्वाहाँ। ब्रह्मणे स्वाहाँ। स्वधा पितृभ्यः स्वाहाँ। नमो रुद्रायं पशुपतंये स्वाहाँ॥३॥

देवेभ्यः स्वाहाँ। पितृभ्यः स्वधाऽस्तुं। भूतेभ्यो नर्मः। मनुष्येभयो हन्ताँ। प्रजापंतये स्वाहाँ। प्रमेष्ठिने स्वाहाँ। यथा कूपः शतधारः सहस्रंधारो अक्षितः। एवा मे अस्तु